ISSN 2455-6033

मीरायन

यू.जी.सी. केयरलिस्ट में सम्मिलित पत्रिका

वर्ष-18 अंक : 03 (पूर्णांक - 71) सितम्बर-नवम्बर, 2024

OPPO Reno8 T 5G

मीरा स्मृति संस्थान, चित्तौड़गढ़ की बहुआयामी त्रैमासिक शोधपत्रिका

क्र.सं.		आलेख/रचना	पृष्ठ
1.		**मीरा-पद**	05
	1.	**सन्त मीराबाई**	
		(1) को बिरहिणी को .... (2) मैं थारे गुण रीझी	
2.		**मीरा-प्रशस्ति**	06
	2.	**शिव मृदुल**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	
		मीराबाई-भोजराज संवाद : लावणी छन्द में रूपक	
3.		**सम्पादकीय**	10
	3.	**प्रो. सत्यनारायण समदानी**, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)	
		फर्जी पत्रिकाओं (**Clone Journals**) का अवैध धन्धा : गहन जाँच एवं कठोर कार्यवाही की आवश्यकता	
4.		**मीरा सन्दर्भपक्ष**	
	4.	**प्रो. (डॉ.) मंजू ए.,कोल्लम (केरल)**	
		मीराबाई की भक्ति-भावना	14
5.		**संत-भक्त पक्ष**	
	5.	**रीना नौटियाल एवं डॉ. निशा शर्मा**, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	
		संत रविदास के साहित्य में तात्कालिक पर्यावरणीय रूप	19
	6.	**डॉ. प्रशान्त कुमार एवं डॉ. अजीत कुमार राव**, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	
		बुद्ध के सामाजिक न्याय की अवधारणा और उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता	23
	7.	**डॉ. मीनू देवी**, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	
		हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भक्तिकालीन रामकथा की परंपरा	30
	8.	**सुश्री भगवती सोनी**, बान्दरसिन्दरी (राजस्थान)	
		दादू साहित्य और अद्वैतवाद	38
	9.	**डॉ. अशोक कुमार**, धर्मशाला (हिमाचलप्रदेश)	
		आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता	44
	10.	**डॉ. कामना सहाय**, ब्यावर (राजस्थान)	
		गौ की तात्विक मीमांसा एवं वैदिक परिप्रेक्ष्य में गो-संरक्षण की महत्ता	48
	11.	**[illegible] एवं डॉ. निशा शर्मा**, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)	
		हिन्दी साहित्य में राम	52

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता

-डॉ. अशोक कुमार

हिन्दी साहित्य की ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि संत कबीर मध्यकालीन संतों में अग्रगण्य हैं। आत्मबोध को उपलब्ध परम रहस्य के अनूठे गायक जिनकी साखी, सबद, रमैनी पाठकों की हृदयतंत्री को झंकृत कर उन्हें रसविभोर कर देते हैं। उनके काव्य में ज्ञान और भक्ति का, काव्य और संगीत का, अनुभूति और अभिव्यक्ति का, लौकिक और अलौकिक का, शून्यता और पूर्णता का अदभुत समन्वय देखने को मिलता है। वह कभी समाज सुधारक, योगी, उपदेशक और भक्त थे। उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। किसी भी साहित्यकार की रचनाएँ अपने युग से प्रभावित होती हैं, क्योंकि युग और साहित्य में घनिष्ठ संबंध होता है। किसी भी युग विशेष के साहित्य को समझने के लिए उस युग की सभी परिस्थितियों का सम्यक् चिंतन एवं अनुशीलन आवश्यक है। संत कबीर का व्यक्तित्व उन परिस्थितियों की देन है, जिन्होंने कबीर को हिन्दी साहित्य में अमर बना दिया। कबीरपंथियों के अनुसार "कबीर सतयुग में सतसुकृत के नाम से, त्रेतायुग में मुनींद्र के नाम से, द्वापरयुग में करुणामय के नाम से तथा कलियुग में कबीर के नाम से प्रकट हुए हैं"[1] कबीरदास ने अपने युग का प्रतिनिधित्व उस समय किया जब हिन्दू और मुसलमान दोनों समाजों की हालत अत्यंत दयनीय थी। छुआछूत, आडंबर, ऊँच-नीच की भावना, जाति बंधन, धर्म के नाम पर धर्म गुरुओं द्वारा शोषण, धार्मिक विद्वेष आदि समस्याएँ चरम सीमा पर थीं। संत कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की बुराइयों पर चोट करते हुए निर्भीकता से कहा-

"अरे इन दो उन राह न पाई। हिन्दू अपनी करे बढ़ाई गागर छुवन न देई।
वेश्या के पायन तर सोवे यह देखो हिंदू आई। मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहे घरही में करे सगाई। बाहर से इक मुर्दा लाए धोए धाय चढ़ वाही।
सब सखियां मिली जेवन बैठी घर भर करे बड़ाई।
हिन्दून की हिंदूवाई देखी तुरकन की तूरकाई।
कहे कबीर सुनो भाई साधो कौन राह है जाई"[2]

संत कबीर ने पूरा जीवन अपनी विचारधारा को सम्यक् समाज में मानवतावादी दृष्टि से अलंकृत करने का प्रयास किया। उनका यह मानवतावादी दृष्टिकोण मानव जाति के साथ-साथ सम्पूर्ण जीवों तक था। मानवतावादी विषयक विचारों का समर्थन करते हुए वह अहिंसा, करुणा, सत्य, अपरिग्रह, समाधा